**बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम।**
**किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम।। २६ ।।**

यहां श्री राजजी महाराज के हुकम के सिवाय और कुछ भी नहीं है। कहने, सुनने और देखने वाला सब हुकम ही है। हुकम ने ही जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी दी और स्वयं ही यह निश्चय कराया कि श्री राजजी महाराज हमारे धनी हैं।

**सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूं, कह्या न जाए जुबांए।**
**ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अर्स दिल माहें।। २७ ।।**

यहां संसार के मुख और जबान से परमधाम के अखण्ड सुख कहे नहीं जाते। यह बातें आशिक-माशूक अर्थात् हमारी और तुम्हारी हैं।

**जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत।**
**निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों खिनकी सिफत।। २८ ।।**

अगर मूल-मिलावे के सुखों को खेल में बयान करने लगूं तो मेरी सारी उम्र ही निकल जाएगी और मैं एक पल की सिफत का भी बयान नहीं कर सकूंगी।

**हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह-अल्ला हकीकत।**
**ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत।। २९ ।।**

श्री श्यामा महारानी ने अपने तारतम ज्ञान से हकीकत को बताकर हम रूहों को सावचेत (सतर्क) किया है। तो अब याद आता है कि हमारे परमधाम के सुख कहां गए और कब मिलेंगे?

**हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फुरमान में मारफत।**
**कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत।। ३० ।।**

हे सुन्दरसाथजी! कुरान के अन्दर हमारे परमधाम के सुखों की हकीकत लिखी है। हमारे वह सुख कहां गए और फिर से कब वह सुख पा सकेंगे?

**रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।**
**दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत।। ३१ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने रूहों को स्वयं अपनी पहचान कराई है और अपने इश्क की साहेबी बताई है। हे सुन्दर साथजी तुम इसकी अपने दिल में चाहना करना।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। १०३० ।।

## खिलवत से चांदनी तांईं

**भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद।**
**हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद।। १ ।।**

श्री राजजी महाराज ने प्रथम भोम मूल-मिलावा में बैठाकर खेल दिखाया है। हम इस उमेद से बैठे कि खेल परमधाम जैसा होगा और हम भूलेंगे नहीं। श्री राजजी महाराज के बिना खेल की हकीकत कौन बता सकता है? इस सब हकीकत के भेदों को तारतम वाणी से समझाया।

Nijanand App

**कहां सुख झरोखे अर्स के, कहां सुख सीतल बयार।**
**कहां सुख बन कहां खेलना, कहां सुख बखत मलार।। २ ।।**

परमधाम के झरोखों के सुख जहां से सुन्दर शीतल हवा आती है, वनों में खेलने के सुख जो वर्षा ऋतु में मिलते थे, वह अब कहां हैं?

**कहां सुख कोकिला मोर के, बन में करें टहूंकार।**
**बादल अंबर छाइया, सुख बीजलियां चमकार।। ३ ।।**

वर्षा ऋतु में वन में जब कोयल और मोर आवाज करते हों, आकाश में बादल छाए हों, बिजली चमकती हो वह हमारे सुख कहां हैं?

**दो दो रूहें मिल बैठती, सुख लेती सुखपाल।**
**कहां सुख साथ मासूक के, सैर जाते जोए या ताल।। ४ ।।**

सुखपालों में हम दो-दो रूहें बैठती थीं और श्री राजजी महाराज के साथ जमुनाजी, हौज कौसर तालाब सैर करने जाते थे। वह हमारे सुख अब कहां हैं?

**ए सुख हमारे कहां गए, कहां जाए करूं पुकार।**
**तुम कोई न देखाया तुम बिना, अजूं क्यों न करो विचार।। ५ ।।**

हे श्री राजजी महाराज! अब मैं आपके बिना किसको जाकर कहूं? आपने अपने बिना किसी और को दिखाया ही नहीं। आप इस बात का विचार क्यों नहीं करते?

**क्यों दिन जावें एकले, किन विध जावे रात।**
**किन विध बसो तुम अर्स में, वह कहां गई मूल बात।। ६ ।।**

हमारे बिना परमधाम में आपके दिन व रातें अकेले कैसे बीत रही हैं? अब आप अर्स में अकेले कैसे रह रहे हैं और आपकी वह मूल की बातें कि आप रूहों के बिना रह नहीं सकते और उनको अपने से अलग नहीं कर सकते, कहां गईं?

**सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मिल मन्दिर बारे हजार।**
**कौन देवे मासूक बिना, सुख भुलवनी अपार।। ७ ।।**

दूसरी भोम के भुलवनी के बारह हजार मन्दिरों की हवेली तथा खड़ोकली के सुख आपके बिना और दूसरा कौन देगा?

**हम अर्स भोम तीसरी, चढ़ देखें नूर मकान।**
**दोऊ द्वारों नूर झलके, ए सुख कब देसी मेहेरबान।। ८ ।।**

हम परमधाम की तीसरी भोम में चढ़कर अक्षरधाम देखते थे। दोनों धामों के दरवाजों के तेज झलकते हैं। उन सुखों को, हे धनी! कब दोगे?

**इत आवत झरोखे मुजरे, हमारे मेहेबूब के।**
**ए सुख धनी हमको, फेर कब देखाओगे।। ९ ।।**

हमारे महबूब (धनी) के दर्शन करने के वास्ते अक्षर भगवान नित्य आते हैं। हे धनी! इस सुख को हमें कब दिखाओगे?

Nijanand App

**बड़ी बैठक जित होत है, इन बड़े देहेलान।**
**ए कब देखाओ मेला बड़ा, मेरे वाहेदत बड़े सुभान।। १० ।।**

तीसरी भोम की पड़साल में बहुत समय तक बैठक होती है। रूहों के इस मेले को, हे धनी कब दिखाओगे?

**चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत।**
**ए सुख अर्स के इन जिमी, हक हमको विध विध देत।। ११ ।।**

चौथी भोम की नृत्य की हवेली की हकीकत प्यार करके कौन बताएगा? परमधाम के अखण्ड सुखों को इस जमीन पर आप हमें तरह-तरह से देते हैं।

**भोम पांचमी सुख पौढ़न के, ए हक की बातें नेक।**
**कौन केहेवे मासूक बिना, आसिक गुझ विवेक।। १२ ।।**

पांचवीं भोम में शयन की तथा श्री राजजी महाराज की मीठी मीठी छिपी बातों को आपके बिना कौन देगा?

**सुख छठी भोम मोहोलन के, ए कौन देवे कर विचार।**
**इन जुबां सुख क्यों कहूं, इन हक के बेसुमार।। १३ ।।**

रंग महल की छठी भोम में सुखपालों का ठिकाना है। इसका विचार करके कौन बताएगा? धनी के बेशुमार सुख हैं जो इस जबान में वर्णन नहीं हो सकते।

**सुख कहा कहूं भोम सातमी, जो लेते खटों छपर।**
**हक हादी रूहें झूलत, साम सामी बांध नजर।। १४ ।।**

सातवीं भोम में खट छप्पर के हिंडोलों तथा श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां के आपस में नजर से नजर मिलाकर झूलने के हमारे सुख कहां हैं?

**सुख हिंडोले भोम आठमी, हक हादी रूहें हींचत।**
**ए चारों तरफों के झूलने, हक हमको देत लज्जत।। १५ ।।**

आठवीं भोम हिंडोले के सुख जहां श्री राजश्यामाजी और रूहें झूलती हैं और चार तरफ से हिंडोलों की ताली पड़ती है, वह कहां गए?

**नौमी भोम बैठाए के, जो सुख नजरों दूर।**
**ए कौन देवे सुख हक बिना, बुलाए के अपने हजूर।। १६ ।।**

नवीं भोम में छज्जों पर बिठाकर दूर-दूर के नजारे देखने के सुख, हे धनी! आपके बिना कौन पास बिठाकर देगा?

**सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात।**
**ए कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात।। १७ ।।**

पूनम (पूर्णिमा) की चांदनी की मध्य रात्रि में दसवीं आकाशी में बिठाकर, हे धनी! आपके बिना, इश्क में भीगी रूहों को, वह सुख कौन देगा?

Nijanand App

**आगे गुमटियों चढ़ाय के, नजरों नूर मकान।**
**कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान।। १८ ।।**

आपके बिना रंग महल की चांदनी पर बनी गुमटियों में बिठाकर सामने अक्षरधाम को अपनी अंगुली के इशारे से आपके बिना, हे लाड़ले धनी! कौन बताएगा?

**दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन।**
**सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन।। १९ ।।**

दसों भोम के महलों के सुख आपके बिना, हे श्री राजजी महाराज! हमको कौन देगा? आपने ही परमधाम के सुख तारतम वाणी लाकर, हमें इस संसार में दिए।

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ १०४९ ॥

## अर्स आगूं खुली चांदनी

**दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन।**
**ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरया नूर अंबर धरन।। १ ।।**

रंग महल के मुख्य द्वार में दर्पण रंग के नूरी किवाड़ हैं। उसकी रोशनी जमीन पर तथा आसमान पर झलकती है। यहां की जबान से वहां की सिफत कैसे कहें?

**दोऊ बाजू बड़े दरवाजे, रूहअल्ला कह्या रंग लाल।**
**बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अर्स दिवाल।। २ ।।**

बड़े दरवाजे के दोनों तरफ जो दीवारें हैं उनका श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने रंग लाल बताया है। मिटने वाले तन और जबान से अखण्ड दीवार का वर्णन कैसे करूं?

**चबूतरे दीवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब।**
**जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब।। ३ ।।**

दोनों चबूतरों पर दीवार में आठ अक्सी मेहराबें हैं। अगर अच्छी तरह से देखें तो इस संसार के स्वप्न का तन तुरन्त छूट जाए।

**ए जो कहे आठ मेहेराब, दोऊ चबूतरों पर।**
**ए बैठक हक हादी रूहें, भरया नूर जिमी अंबर।। ४ ।।**

यह जो आठ मेहराबें दोनों चबूतरों पर बताई हैं, इन चबूतरों पर श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठती हैं और उनका तेज जमीन से आसमान तक फैलता है।

**बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अर्स द्वार।**
**दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार।। ५ ।।**

रंग महल के दरवाजे के दोनों चबूतरों पर पांच नगों के (हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी) बीस थंभे दस बाएं तथा दस दाएं झलकते हैं।

**हीरा मानिक पोखरे, पाच नीलवी जे।**
**नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाईं यही नूर के।। ६ ।।**

हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी (नीलम) के दस थंभ दाहिनी तरफ तथा इसी तरह के दस थंभ बाईं तरफ हैं।

Nijanand App